M.Ed - III Sem.

Advanced Research Methodology
(C.C - 10)

ज्ञान एवं इसके स्रोत (Knowledge and its Resources)

मानवीय ज्ञान व इसका भण्डार सदैव गतिशील रहता है जिसके फलस्वरूप इसमें निरन्तर परिवर्तन एवं वृद्धि की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। सामान्यतः मानवीय ज्ञान की तीन अवस्थाएँ होती हैं-

मानवीय ज्ञान
(Human Knowledge)

①	②	③
ज्ञान का संचयन	ज्ञान का अन्तरण	ज्ञान का सृजन
Preservation of knowledge	Transformation of knowledge	creation of knowledge

① Preservation of knowledge :- इस अवस्था के अन्तर्गत स्मरण, लेखन, मुद्रण, भण्डारण आदि विभिन्न तरीकों के द्वारा उपलब्ध ज्ञान का संचय किया जाता है।

② Transformation of knowledge :- द्वितीय अवस्था में विभिन्न संचरण माध्यमों की सहायता से उपलब्ध संचित ज्ञान को आगी पीढ़ी को प्रदान किया जाता है।

Scanned by CamScanner

(3) Creation of Knowledge → तृतीय अवस्था में नवीन ज्ञान (Raw Knowledge) का सृजन करके ज्ञान भण्डार को समृद्ध किया जाता है। अनुसंधान वास्तव में ज्ञान की तृतीय अवस्था का सूचक है जो औपचारिक तथा सुव्यवस्थित ढंग से नवीन ज्ञान का सृजन करने की प्रक्रिया मानी जाती है।

* ज्ञान की एक सर्वमान्य परिभाषा देना कठिन है क्योंकि यह सन्दर्भ एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है। यही कारण है कि दार्शनिक परिप्रेक्ष्यों तथा वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्यों में भी ज्ञान का स्वरूप बदलता रहता है।

साधारण ज्ञान (Common Sense Knowledge) → यह ज्ञान दिन-प्रतिदिन के अवलोकनों से प्राप्त होता है। यह ज्ञान प्रायः व्यक्तिगत पक्षपातों, गैर सार्वजनिकता, अप्रमाणिकता, आत्मनिष्ठता, अनिश्चितता, तथा अस्पष्टता की सीमाओं से प्रभावित रहती है व इसकी विश्वसनीयता, वैधता व भविष्य कथन क्षमता प्रायः कम होती है।

तार्किक ज्ञान (Logical Knowledge) → तार्किक ज्ञान वैज्ञानिक विधियों से प्राप्त

Scanned by CamScanner

होते हैं इनमें सात विशेषतायें परिलक्षित होती है। ये इस प्रकार है- वस्तुनिष्ठता, सुव्यवस्थता, परिशुद्धता, सर्वजनीनता, प्रामाणीयता, मत्यात्मक तथा भविष्य कथन क्षमता। वस्तुतः तथ्यों के वस्तुनिष्ठ विश्वसनीय व वैध निरीक्षण तथा विश्लेषण से प्राप्त सूचनायें ही तार्किक ज्ञान है।

प्राचीन काल से वर्तमान तक ज्ञान प्राप्त करने कि निम्न पांच विधियों का प्रयोग स्वीकार किया गया:-

(1) ज्ञान की वैयक्तिक अनुभव विधि-:
(Personal experiance method of knowledge)

ज्ञानार्जन की एक प्रमुख साधन इन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव होते हैं। प्राचीन काल में आँख, नाक, कान, जिह्वा व त्वचा को पाँच ज्ञानेन्द्रियों के रूप में स्वीकार किया जाता है।

(2) ज्ञान की अधिकारिकता विधि-:
(Authority method of knowledge)-:

अनादि काल से व्यक्ति अपने से श्रेष्ठ, मान्य या जानकार व्यक्तियों के प्रति आस्था, श्रद्धा, व विश्वास का भाव रखता रहा है, किसी समस्या, कठिनाई या जिज्ञासा के उत्पन्न होने पर वह उनके परामर्श से कार्य करता है। श्रेष्ठ, मान्य या जानकार व्यक्ति / संस्था / वस्तु के

द्वारा दिये गये परामर्श, उत्तर या जानकारी को अधिकारिकता मत कहा जाता है व इस प्रकार से ज्ञान प्राप्त करने की विधि को अधिकारिकता विधि कहते हैं। जैसे - बाढ़ क्यों आती है?, नदी की गहराई क्या है?, सूर्य ग्रहण क्यों पड़ता है व बिजली क्यों कड़कती है? आदि -

(3) ज्ञान की निगमन तर्क विधि (Deductive Reasoning method of knowledge)

निगमन तर्क विधि का प्रतिपादन सिद्ध ग्रीक दार्शनिक अरस्तू ने किया था पिछली पच्चीस शताब्दियों से सुकरात को ज्ञान व दर्शन का पर्याय माना जाता रहा है। यह निगमन विधि तर्क के रूप में ज्ञात से अज्ञात की ओर प्रवृत्त होकर ज्ञान प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती है। निगमन तर्क के रूप में प्रयुक्त होने वाले निरपेक्ष न्याय वाक्य में तीन पद या प्रतिज्ञप्ति (Premises) या तीन कथन होते है जिन्हे निम्नवत लिखा जाता है-

1. मुख्य आधार वाक्य (major Premise) - सार्वभौमिक प्रकृति
2. पक्ष आधार वाक्य (minor Primise) - विशिष्ट उदाहरण
3. निष्कर्ष (conclusion) - बिन्दु 1 व 2 का सम्बन्ध

उदाहरण (example) →:

1. प्राणी नश्वर है।

Scanned by CamScanner

2. सुरेन्द्र एक प्राणी है।
3. सुरेन्द्र नश्वर है।

स्पष्ट है कि इस विधि द्वारा पूर्व ज्ञान, उनादर्श, सिद्धान्त, सामान्यीकरण या प्रणाली में किसी तथ्य विशेष या परिस्थिति-विशेष को डालकर उस तथ्य या परिस्थिति विशेष के बारे में निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है।

(4) ज्ञान की अगमन तर्क विधि - (Inductive Reasoning method of Knowledge)

ज्ञानार्जन की अगमन विधि के प्रेरक बेकन (Francis Bacon) थे, इसलिए इस विधि को बेकोनियन विधि के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है। निगमन विधि के विपरीत अगमन तर्क विशिष्ट से सामान्य की ओर प्रवृत्त होता है। इस विधि के अन्तर्गत व्यक्ति विशिष्ट प्रकार के दृष्टान्तों का संकलन करके उनमें निहित समानता को पहचानने का प्रयास करता है एवं तदनुक्रम में नवीन ज्ञान को अर्जित करने के लिए उस दिशा में आगे बढ़ता है। जैसे-

(1) पूर्ण अगमन

किसी परिवार के सभी सदस्यों की शिक्षा निम्नवत है-
प्रथम सदस्य - बी० ए०
द्वितीय सदस्य - बी० एस०सी०
तृतीय सदस्य - बी० ए०

(2) अपूर्ण अगमन

रमेश नश्वर है।
सुरेश नश्वर है।
गीता नश्वर है।
करण नश्वर है

Scanned by CamScanner

पूर्ण आगमन	अपूर्ण आगमन
चतुर्थ सदस्य- बी॰ काम॰	सुधा नश्वर है।
पंचम सदस्य- बी॰ टेक॰	लता नश्वर है।
निष्कर्ष- अतः परिवार के सभी सदस्य स्नातक है।	निष्कर्ष- अतः मानव नश्वर है।

(5) ज्ञान की वैज्ञानिक विधि-
(Science method of knowledge) →

मानव जाति के ज्ञान वृद्धि एवं समस्या समाधान के कार्य में आगमन विधि व निगमन विधि की असफलता ने वैज्ञानिक तर्क विधि को जन्म दिया। यह विधि इन दोनो विधियों का सम्मिश्रण है। न्यूटन, गैलीलियो, मेण्डल, डार्विन आदि वैज्ञानिकों ने आगमन व निगमन तर्क विधियों को मिलाकर एक नये स्वरूप में प्रस्तुत किया।

इस विधि में पहले विशिष्ट उदाहरणों के आधार पर परिकल्पित सामान्यीकृत निष्कर्ष निकाला जाता है एवं तत्पश्चात विशिष्ट स्थितियों में उसका सत्यापन किया जाता है। स्पष्ट है कि इस विधि का प्रथम भाग आगमन तर्क पर आधारित है एवं दूसरा भाग निगमन तर्क पर आधारित होता है।

Scanned by CamScanner

निगमन तर्क के मुख्य आधार-वाक्य को परिकल्पना के रूप में प्रस्तुत करके उसका बाद में आगमन विधि के द्वारा अवलोकित सूचनाओं के संकलन व विश्लेषण से परीक्षण किया जाता है। इस प्रकार परिकल्पना निर्माण, परिकल्पना परीक्षण व परिकल्पना सत्यापन से प्राप्त परिणाम ज्ञानार्जन करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। इस विधि में सम्मिलित विभिन्न सोपानों को जान डीवी ने निम्न पाँच भागों में विभक्त करके प्रस्तुत किया है—

→ Step of scientific Method ←

Step-1 →: समस्या की पहचान व परिभाषीकरण

Step-2 →: परिकल्पना का निर्माण

Step-3 →: सूचनाओं का संकलन, संगठन तथा विश्लेषण

Step-4 →: निष्कर्ष प्राप्ति

Step-5 →: विशिष्ट परिस्थितियों में परिकल्पना का सत्यापन

Scanned by CamScanner